

राजस्थान
नेत्र ज्योति

RNI No.: RAJHINI/ 2014 / 65130

वर्ष : 2023

अंक : 4

वार्षिक अंक 2023

अक्टूबर - दिसम्बर 2023



आँखें दान करें



आँखें अमर करें

खूबसूरत आँखों को हर पल-हर दिन नई दुनिया दिखाएं...



आई बैंक सोसायटी ऑफ राजस्थान



सम्पादकीय

**जब फैसला कर लिया ऊंची उड़ान का
फिर देखना फ़िजूल है क़द आसमान का.....!**

उपरोक्त पंक्तियां फरवरी 2002 में स्थापित आई बैंक सोसायटी ऑफ राजस्थान की स्थापना के 22 वर्षों की सफल विकास यात्रा का एकमात्र मूल मंत्र है और आगे भी रहेगा।

आई बैंक सोसाइटी के रूप में एक छोटे से पौधे को पेड़ बना कर उसी फलने फूलने का मार्ग प्रशस्त करके स्व. एम. एल. मेहता साहब अनंत में विलीन हो गए लेकिन अपने पेड़ को वट वृक्ष का आकार लेते देख कर उनकी आत्मा आज स्वर्ग में अवश्य प्रसन्न हो रही होगी। आई बैंक के कार्य विस्तार के लिए उन सभी समाज सेवी महानुभावों को आशीर्वाद दे रही होगी, जो चाहें अब इस दुनिया में नहीं रहे अथवा अब अपनी शारीरिक अक्षमता के कारण सक्रिय नहीं हैं और जो वर्तमान में अंधता निवारण के लिए अपना तन-मन और धन अर्पित कर परोपकार के इस महायज्ञ में अपनी भूमिका अदा कर रहे हैं।

आज हमें याद करना चाहिए 24 नवंबर 2001 का दिन जब जयपुर में आई बैंकिंग केंद्र की स्थापना पर आयोजित एक संगोष्ठी से प्रेरित होकर पूर्व आईएफएस श्री आर एस भंडारी व श्रीमती भावना जगवानी की पहल पर 10 दिन बाद ही 3 दिसंबर 2001 को एक बैठक बुलाई गई जिसमें सर्वसम्मति से आई बैंक सोसाइटी की स्थापना का निर्णय लेने के बाद 6 फरवरी 2002 को आई बैंक सोसाइटी ऑफ राजस्थान की विधिवत स्थापना हो गई। पूर्व मुख्य सचिव स्व. एम. एल. मेहता इस समिति के संस्थापक अध्यक्ष, स्व. यतींद्र सिंह, पूर्व मुख्य सचिव तथा श्रीमती भावना जगवानी, उपाध्यक्ष, पूर्व आईएफएस श्री आर. एस. भंडारी सचिव, पूर्व आईएफएस श्री बी. सी. सचेती संयुक्त सचिव तथा एन सी डंडिया कौषाध्यक्ष चुने गए।

21 साल के लंबे सफर में 13 वर्ष तक स्व. एम. एल. मेहता साहब आई बैंक सोसाइटी की विकास यात्रा रथ के सारथी रहे। उनके निधन के बाद श्री बी. एल. शर्मा अध्यक्ष चुने गए। श्री शर्मा इस उड़ान यात्रा को अपने कुशल नेतृत्व में पिछले एक दशक से संगठन को सफलता के आकाश में और अधिक ऊंचाई तक आगे ले जाने में जो कुछ कर रहे हैं वह किसी से छिपा नहीं है। सेवानिवृत्त आईएएस, आईपीएस ही नहीं अलग-अलग सेवाओं के अधिकारियों, मन में सेवा भावना रखने वाले समाजसेवियों, दानदाताओं और कार्यकर्ताओं को दृढ़-दृढ़ कर लाना और इस सेवा कार्य से उनको जोड़ना उनके चुम्बकीय नेतृत्व की खास विशेषता है। संस्था को मजबूत बनाने के लिए गत एक साल के सफर में वे अंदरूनी मंजी रहे लोगों को उजाले की ओर ले जाने में जीजान से जुटे हुए हैं।

आई बैंक सोसाइटी ऑफ राजस्थान के दो दशकों की तुलना में 2023 के साल की विकास यात्रा के दौरान सोसायटी ने प्रगति की राह पर आगे बढ़ते हुए कई कीर्तिमान स्थापित किए हैं। एक साल की अवधि में दूरदर्शी, धृढ़ निश्चयी और संकल्पशील नेतृत्व के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही पूरी टीम के अथक प्रयास के कारण अंधता निवारण के हर क्षेत्र में प्रारंभ हुए नवाचारों से कोर्नियल ब्लाइंडनेस पीड़ितों के मन में

नयी आशा और नये विश्वास का संचार हो रहा है।

सबसे बड़ा निर्णय जो प्रदेश की सरकार ने लिया वह “राईट टू साइट” का अधिकार है जिसके तहत राज्य में अंधता नियंत्रण नीति का निरूपण किया गया। कोर्निया की खराबी के कारण उपचार योग्य दृष्टिबाधितों को अपनी आंखों से यह दुनिया देखने का कानूनी अधिकार दिया गया है। इसमें सबसे बड़ा योगदान ईबीएसआर के अध्यक्ष श्री बी. एल. शर्मा का रहा है जो विगत दो दशकों से अंधता निवारण के क्षेत्र में नवाचारों के जनक माने जाते हैं। उनके द्वारा प्रस्तावित रूपरेखा के आधार पर ही सरकार ने यह पोलिसी को तैयार की। इस कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन में ईबीएसआर की प्रमुख भूमिका होगी। इस योजना के तहत अस्पतालों में कोर्निया प्रत्यारोपण का कार्य जिलास्तर के सरकारी व निजी अस्पतालों में भी होने लगेगा। सरकार द्वारा आवश्यक प्रशिक्षण एवं उपकरणों की व्यवस्था भी की जा रही है इसको और गतिशील बनाना होगा।

आई बैंकिंग कार्यक्रम को सपोर्ट देने के लिए अजीम प्रेमजी फिलन्थ्रोपिक इनीशिएटिव का कम्युनिटी आउटरीच प्रोग्राम भी इसी वर्ष में स्वीकृत हुआ जिसके तहत दौरा जिले के अलावा बीकानेर, गंगानगर, अजमेर जिलों के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र में नेत्रदान के प्रति जागरूकता बढ़ाने तथा कोर्निया दान करने के लिए विभिन्न स्तरों पर जनता को नेत्रदान से अंधता उन्मुलन की जानकारी देने का कार्य सफलतापूर्वक किया जा रहा है।

नये नये चैप्टर, कलेक्शन सेंटरों की स्थापना हो रही है, पुलिस, जेल, शिक्षा, ग्रामीण विकास आदि विभागों के अलावा निजी कार्यालयों, स्कूलों कोलेजों, प्राइवेट शिक्षण संस्थानों, स्वयं सेवी संगठन, संस्थाओं में तथा धार्मिक स्थलों से भी जागरूकता कार्यक्रमों के लिए सहयोग बढ़ता जा रहा है। नेत्रदान कार्यक्रम की सफलता के लिए आधुनिकीकरण के साथ आई बैंक सोसाइटी ऑफ राजस्थान के स्टाफ के लिए भी अनेक लाभकारी योजनाएं बनाई गई हैं ताकि वे अधिक परिश्रम से कार्य कर सकें।

देश एवं प्रदेश में कोर्नियल ब्लाइंडनेस को कम करने में आई बैंक सोसाइटी ऑफ राजस्थान पूरे देश में अग्रणी भूमिका अदा करेगा, इसमें कोई संशय नहीं है।

लक्ष्मण बोलिया
सम्पादक



President Message



Dear Friends,

I am happy to present the First Annual Rajasthan Netra Jyoti issue.

As you are aware this is an in-house quarterly magazine of the Eye Bank Society of Rajasthan for sharing our progress and growth with all stakeholders. This year it was decided that the issue coming after closing of the Year will be an annual issue encompassing all the activities of the preceding year. This will help members look at our progress at a glance. Therefore, this is an annual issue for the year 2023.

The Year 2023 has been a year of achievement and reasonable success for the Eye Bank Society of Rajasthan. On the cornea front, we achieved creditable success. Against the collection of 2684 corneas last year we collected 3150 corneas this year. Similarly, we provided 2003 corneas for transplantation against 1704 during the last year. Thus, our collection as well as transplantation has been the highest in our existence. It has been the result of continuous efforts and commitment of the Members and the members of staff. Congratulations to one and all.

The year 2023 was the first year of implementing the Azim Premji Foundation program by EBSR. Under this program we have taken up an intensive community outreach program in the district of Dausa. It is quite interesting to find that in Dausa under this program we have been able to reach nearly 3000 people with the message of Eye donation and remove the social misgivings on the subject. As a result of this work, eye donation in Dausa has also started which was initially not part of the project. Ajmer under this project has achieved much higher results than provided for the project.

Though, there was a provision of opening only one new centre at Bikaner, which was duly opened, however, due to the availability of resources we could open one more New centre at Sri Ganganagar also.

We have introduced some new steps and schemes for the coming years. First of all we have revised the criteria for evaluating performance of the employees based on which star performers will be decided. It is basically to provide an equal playing field and equal opportunity for all field employees irrespective of the locational advantage. Similarly, norms for deciding the best chapter have also been revised so that every chapter can reach the top based on performance. Earlier it was predominantly in favour of the number of corneas collected and transplanted.

Most important initiative that we have launched is a Welfare Package for our employees. This includes having a Provident Fund Scheme, Gratuity Scheme, Group Personal Accident Insurance Policy, Medical Facility under ESI and under the Chiranjeevi Swasthya Scheme. This will give them a Social Security Cover which will enable them to work tension free. Similarly, on consistent outstanding performance it has been provided that an employee will be entitled to additional increment in the pay and even out of turn promotion. A Signing Bonus to employees for staying 1 year or more and to employees who refer him will also be available.

I am sure these measures will help in stability and reasonable future prospects to all employees. We look forward to much better results in future.

Wishing everyone A very Productive 2024.

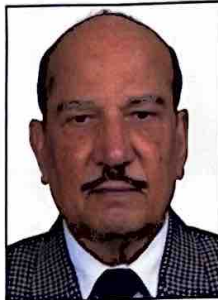
B. L. Sharma
President

Prioritizing Employee Welfare: A Cornerstone of Organizational Success

Introduction: Employee welfare is a fundamental aspect of organizational management, emphasizing the well-being, health, and satisfaction of employees within the workplace. It encompasses various factors such as fair compensation, safe working conditions, opportunities for professional development, work-life balance, and support for physical and mental health. Prioritizing employee welfare is not only a moral imperative but also a strategic decision that drives productivity, fosters employee loyalty, and enhances organizational reputation.

IMPORTANCE OF EMPLOYEE WELFARE:

- 1. Productivity and Performance:** Employees who feel valued and supported by their organization are more motivated to perform at their best. A positive work environment, coupled with adequate resources and support, cultivates higher levels of productivity and efficiency.
- 2. Employee Retention:** Organizations that prioritize employee welfare experience lower turnover rates. When employees feel satisfied with their work conditions and perceive that their well-being is a priority for the company, they are more likely to remain loyal and committed.
- 3. Talent Attraction:** In today's competitive job market, potential employees are drawn to organizations that demonstrate a genuine commitment to employee welfare. A reputation for prioritizing employee well-being can attract top talent and serve as a competitive advantage.
- 4. Health and Well-being:** Prioritizing employee welfare includes promoting physical and mental health within the workplace. Healthy and happy employees are more engaged, resilient, and better equipped to handle workplace challenges.
- 5. Organizational Culture:** Employee



B. L. Sharma
President - EBSR

welfare initiatives contribute to fostering a positive organizational culture characterized by trust, respect, and collaboration. A supportive culture encourages open communication, teamwork, and innovation.

STRATEGIES FOR PRIORITIZING EMPLOYEE WELFARE:

- 1. Competitive Compensation:** Fair and competitive compensation packages demonstrate an organization's recognition of the value contributed by its employees. Regular salary reviews and equitable pay practices are essential.
- 2. Safe Working Environment:** Ensuring workplace safety through proper training, hazard identification, and adherence to health and safety regulations is crucial for employee well-being.
- 3. Work-Life Balance:** Implementing policies and practices that support work-life balance, such as flexible work arrangements, remote work options, and paid time off, helps employees manage their personal and professional responsibilities effectively.
- 4. Professional Development Opportunities:** Providing opportunities for skill development, training programs, career advancement, and mentorship demonstrates an organization's investment in the growth and development of its employees.
- 5. Employee Assistance Programs (EAPs):** Offering access to counseling services, mental health support, and resources for managing stress can help employees cope with personal and work-related challenges.

Prioritizing employee welfare is not just a moral obligation but also a strategic imperative for organizations aiming to thrive in today's competitive landscape. By investing in the well-being of their employees, organizations can enhance productivity, foster employee loyalty, attract top talent, and create a positive workplace culture conducive to success. Ultimately, a holistic approach to employee welfare benefits both individuals and the organization as a whole, driving sustainable growth and prosperity.

Recognition and Rewards: Recognizing employees' contributions through formal recognition

programs, rewards, and incentives boosts morale and reinforces a culture of appreciation.

EBSR WELFARE PROGRAMME -

Keeping in view factors enumerated above the eye Bank Society of Rajasthan has now formulated a comprehensive Welfare Package for its employees. Main features of this package are as follows: -

1. Employees Provident Fund

It has become applicable from 1st January 2024, for all employees who are drawing monthly salary up to Rs. 15,000/ being compulsory for them.

Employee's monthly contribution will be 12% of his salary. Similarly, EBSR will contribute monthly amount equal to employees 12% of salary. Though, an employee can deposit higher amount, but EBSR contribution will remain equal to 12% of salary.

For other employees, drawing more than Rs 15,000, pm it is voluntary who can join with the permission of PF authorities. In such cases employee monthly contribution will be Rs. 1800/pm. EBSR will also give a matching contribution of Rs.1800/ monthly. Here also an employee can deposit higher amount but EBSR contribution will remain Rs. 1800/.

2. Group Personal Accident Insurance Policy

EBSR has taken Group Personal Accident Insurance Policy to provide cover to employees in case of an accident. The Insured amount is Rs. 20 lakhs for each employee. It is on an annual basis starting from 1.1.24 to 31.12.24.

In case of death the Nominee will get Full Insurance amount. In case of a Permanent Total Disability Also Full amount will be payable.

3. Medical Facility To Employees Not Covered Under ESI

All employees of EBSR who are drawing pay up to Rs 15,000/pm are already covered under ESI.

To provide reasonable medical facility to employees drawing higher salary as they not covered under the ESI it has been decided that if

such employee gets registered under Chiranjeevi Swasthya Beema Yojana Or Similar Govt. Scheme of health care then EBSR will reimburse the annual premium of this scheme.

4. Additional Increment for Outstanding Performance

It has been decided that in future annual increments will be given after satisfactory annual performance. Now it has been also provided that if an employee gives Outstanding Performance based on laid out performance norms of the society then he/she will be eligible of additional increment.

5. Out of Turn Promotion

At present there is a provision of promotion for employees at different levels after a stipulated period based on satisfactory service. Now it has been provided that if an employee gives consistently Outstanding Performance then he/she will be eligible for OUT of TURN PROMOTION also.

6. Signing Bonus To New Employee

In order to provide an incentive to new employee to stay it has been laid down that if an employee serves the EBSR satisfactorily, at least for a period of one year, then an amount of Rs 2500/will be paid as retention bonus.

7. Referral Bonus To Existing Employee

In order to get employees with good background through known people it is now provide that if an employee of EBSR refers a candidate and if that person is selected, the as an employee if he/she gives satisfactory services then the employee who referred the name will be given Rs 1500 as referral bonus.

8. Employees Honour Board

In the Office of the EBSR a Honour Board will be installed on which name and relevant details of those employees will be displayed who have been in the service of the EBSR above a certain number of years and have contributed in the growth of the organization.

Honoring Distinguished Guests - A Special Visit :



Dr. G. N. Rao, Founder Chairman of the LVPE Eye Institute, Hyderabad, a pioneer in the field of Eye Banking, visited Eye Bank Society of Rajasthan on 8th December 2023. He had guided the Society from the very first day of its inception. He observed that EBSR is only Community Bank in the country which has very good community support and has volunteers from diverse fields working for the cause of giving sight to corneal blind persons. Its 20 year progress is very impressive. He applauded the commitment of the members and hoped that the EBSR will continue to be the leading eye bank of the country.



Smt. Shubra Singh IAS, Additional Chief Secretary, Department of Medical & Health visited Eye Bank Society of Rajasthan on 16th June 2023. During this meeting, she was briefed about activities of the Eye bank. She observed that the Eye Bank Society of Rajasthan has taken a leadership in the Blindness Control Programme in the State. Strategy for implementation of "Policy for Blindness Control was also discussed. Subsequently, she took number of meetings to strengthen Eye Banking in the State.

Optimizing corneal utilization and quality insights

Corneal transplant has evolved considerably but an adequate supply of viable tissue to meet the growing demand is still a priority for speciality. There is need to improve quality of tissue by proper donor selection process, use of appropriate techniques for enucleation like gentle handling and gentle removal of adherent iris tissue and preservation of cornea in different media, frequent training of



Dr. Garima Agarwal M.D.
Medical Director-EBSR

technician, transport of tissue and evaluation of tissue on slit lamp.

Now a days corneal surgeon are shifting from penetrating keratoplasty to lamellar keratoplasty in most of cases. It's a time to rethink allocation policies to facilitate the division of donor cornea into multiple graft for multiple recipient for lamellar keratoplasty.

Setting New Standards Benchmarking Performance Evaluation in Eye Banking

Performance evaluation serves as a cornerstone for organizational success, offering valuable insights into individual and collective contributions while identifying areas for improvement. In the realm of eye banking, the Eye Bank Society of Rajasthan (EBSR) has embarked on a groundbreaking journey to establish new standards for performance evaluation, aligning its mission of blindness control through cornea transplantation with a fair and transparent assessment framework.

The Need for Change:

The catalyst for this transformative shift in performance evaluation methodologies stemmed from the diverse operational landscape of EBSR collection centers and chapters. Operating under distinct conditions and facing unique challenges, the previous one-size-fits-all approach failed to capture the nuanced performances of Eye Donation Counselor-cum-Technicians (EDCTs) and chapters. The shortcomings of traditional metrics, such as cornea collection numbers, necessitated a more holistic and equitable evaluation system that could accurately gauge the multifaceted aspects of the organization's endeavors.

Crucial to the evaluation of an Eye Bank's performance are key quality indicators, namely the Adverse Reaction Rate (ARR), Discard Rate (DR), and Protocol Deviation

Rate (PDR). Ideally, the evaluation of EDCTs should encompass each of these indicators. However, due to

the unavailability of necessary data and procedural constraints, a comprehensive evaluation of the Adverse Reaction Rate (ARR) is currently unfeasible. For the Discard Rate (DR), an evaluation has been incorporated in the form of Utilization Rate, while the assessment of Protocol Deviation Rate (PDR) has been partially addressed through the evaluation of the quality of excision. This nuanced approach ensures that the performance evaluation of EDCTs aligns with the critical quality indicators, emphasizing the organization's commitment to refining assessment processes for enhanced transparency and accuracy.

Pioneering Initiatives:

EBSR's commitment to setting new standards for performance evaluation reflects its dedication to achieving excellence in cornea transplantation. The organization's focus on benchmarking performance has led to the development of a comprehensive and inclusive evaluation framework. This new system considers various dimensions of EDCTs' work, categorizing

evaluations into specific domains like cornea-related programs, awareness initiatives, notification to consent rates, and the quality of excision.

Key Components of the New Evaluation:

- Cornea-Related Program:
- Monthly targets for transplantable



Kapil Gerg
Vice President, EBSR

EBSR's innovative approach to performance evaluation sets a precedent for organizations dedicated to impactful social causes. By establishing a comprehensive, transparent, and motivating system, they not only ensure the optimal utilization of collected corneas but also inspire a culture of excellence and commitment among their team members. This initiative serves as a benchmark for other eye banking organizations, illustrating the importance of evolving evaluation systems to meet the dynamic needs of the healthcare landscape. Through this transformative journey, EBSR is not just setting new standards; it is shaping the future of impactful and compassionate eye care.

corneas,

- Utilization percentage (number of transplanted

corneas x 100/ total number of corneas collected), and

- Hospital Cornea Retrieval Program (HCRP) to Voluntary Eye Donation (VED) ratio.

Awareness Program:

- Establishment of Help Desks at least twice a month,
- Attending 'Tiyе Ki Baithak' or condolence meeting.

Notification to Consent Rate:

- Timely entry of death notifications during duty hours.
- Screening percentage of entered notifications, and
- Consent percentage of suitable cases.

Quality of Excision:

- Evaluation by the Medical Director based on the quality of excised corneas.

Grant of Awards:

In a bid to infuse a competitive and motivational edge into the evaluation process, EBSR introduced the 'Star Performer of the Quarter' award and the 'Annual Best Chapter Award' sometime back. The revised evaluation mechanism is expected to result in a more objective and fair identification of star performer every quarter and the best chapter annually.

Ensuring Fairness:

The new evaluation system introduces fairness by considering factors such as higher marks for exceeding targets, better utilization rates, and a relative increase in the Hospital Cornea Recovery Program compared to voluntary eye donation. Maintaining discipline among EDCTs is paramount, and instances of indiscipline could lead to disqualification. Strict adherence to ethical standards is ensured through the inclusion of guidelines.

Equity in Evaluation:

Recognizing the diverse working conditions and

challenges faced by different chapters and EDCTs, the evaluation system employs a flexible approach. Maximum marks are kept flexible, and the final score is computed as a percentage of marks obtained, ensuring equity in the evaluation process.

Ensuring Consistency:

In the pursuit of excellence, it is imperative that the performance of an Eye Donation Counselor-cum-Technician (EDCT) remains consistently commendable. To uphold this standard, the evaluation process involves a meticulous approach. Marks are granted separately for every month in a quarter, acknowledging the dynamic nature of their responsibilities. The average score is then calculated, ensuring that the identification of the 'Star Performer of the Quarter' is based on sustained high performance over time rather than isolated achievements. This approach emphasizes the importance of a consistently high level of dedication and effectiveness, aligning with the organization's commitment to recognizing enduring excellence in the service of cornea transplantation.

Alignment for Best Chapter Evaluation:

The evaluation mechanism for identifying the Best Chapter has been modified to align with the new system for EDCTs. Greater emphasis has been placed on awareness programs and the meticulous maintenance of records and equipment, which undergo thorough examination during the annual audit.

Commitment to Continuous Improvement:

EBSR's recognition of the need for continuous improvement is evident in the periodic reviews and planned adjustments to address shortcomings or incorporate new learnings. This emphasis on future reviews underscores the organization's commitment to staying adaptive and responsive to evolving challenges.

APPI Project Milestones : Performance Overview

Azim Premji Philanthropic Initiative (APPI), whose vision is to contribute towards a more just, equitable, humane and sustainable society, is supporting people who are disadvantaged and marginalised. Since EBSR's mission is also similarly placed to help the disadvantaged in the society, APPI after prolonged deliberations, decided to provide financial support to EBSR for pursuing its objective of restoring sight to the visually impaired. A three year Project beginning from the year 2023 and comprising of following three programmes, was approved and a grant of INR 86.92 Lks. was sanctioned for the first year:

1. Community Outreach Programme,
2. Network Expansion Programme, and
3. Strengthening of existing structure.

1. Community Outreach Programme :

The programme aims at spreading awareness about eye donation in the masses in rural and urban areas, so that the pace of cornea collection improves in the state. The focus of the programme is on networking with grass root level rural institutions, like Panchayats, Gram Sabhas, local Hospitals and Dispensaries, schools and colleges etc.

Joining hands with other social organisations, functional in the locality is another important component of the programme. All in all the object is to make eye donation a Community movement, so that the message reaches to all stakeholders and helps to alleviate the suffering of visually impaired and provide them means to lead a dignified life. The programme is being implemented in Daussa district.

Following Milestones have

been set for achieving the objectives of the programme:

S.N.	Activity	Milestones		
		2023	2024	2025
1.	Organising Eye Donation Awareness Camps	24	36	36
2.	Organising Sabhas & Events at Panchayat level.	12	15	20
3.	Meetings and participating in Govt / Semi Govt / other group activities.	12	16.	36
4.	Participate in Health camps for communities.	2	4	4
5.	Eye Donation Workshops.	2	4	4



Vinay Sacheti
Vice President, EBSR

Programme Performance / Outcome :

Outreach programme has been a unique experience for EBSR. The outcomes are quite revealing and encouraging. Some of these are listed as under :

1. A team of Project Officer and Project Councillor have successfully executed the programme, achieving the set Milestones for all the activities. It has facilitated participation by more than 3000 persons from different backgrounds in awareness campaigns held at 37 different locations during the year 2023, which have made them aware about virtues and importance of eye donation.

2. Meetings and events organised at Gram Sabha and Panchayat level have ensured connectivity with grass root level public representatives, who have become

EBSR's Ambassadors in promoting Eye Donation.

3. Holding of Health Camps with facility of basic eye check up have proved to be a big attraction amongst the villagers. These camps have created considerable goodwill for



EBSR in the rural areas . Two such camps were organised in Daussa during the year 2023.

4. Networking with NGOs , namely CULP (The Centre for Unfolding Learning Potentials), RGAVP (Rajasthan Grameen Ajeevika Vikas Parisad) , Jeevandhara, Mamta Foundation, Rotary Club , SYSS (Samajik Yuva Sangthan Sansthan) and other Govt organisations have facilitated participation in group activities and thereby an easy access to the public at large.

5. Eye Donation Workshops organised at 8 different locations during the year have helped in dispelling myths and taboo about eye donation in general public .

6. Apart from awareness activities, HCRP (Hospital Cornea Retrieval Programme) has also been initiated in local Hospital in Daussa .

2. Network Expansion Programme:

At present EBSR collects corneas from Jaipur, and other 9 Eye Collection Centres (ECC) located at different places in Rajasthan , namely , Ajmer, Jodhpur, Udaipur, Kota, Pali, Bhilwara, Alwar, Bundi and Abu Road. In order to expand operational coverage to other parts of Rajasthan two more ECCs

have been set up — one at Bikaner and the other at ShriGanganagar during the year 2023, under the Network Expansion Programme, supported by

APPI lays considerable emphasis on timely monitoring of the Projects funded by them. Outcome of the programmes will always remain their priority. They want to ensure that the benefit of the programme reaches to the stakeholders as envisaged in the Project. Continuance of future collaboration will depend on EBSR's ability to achieve the stipulated targets and maintain sustainability.



APPI. The aim is to spread awareness about eye donation and create base for cornea collection in new areas.

Milestone of collection of 40 corneas from Bikaner and ShriGanganagar Centres has been fixed for the year 2023 ,against which 80 corneas have been collected .

3. Strengthening of Existing Structure :

In order to strengthen infrastructure of the existing Ajmer Chapter , it has been included in this programme . The object is to provide additional man and material support to Ajmer Chapter to enhance its functional capacity, so that more usable corneas could be collected.

Milestone of collection of 90 transplantable tissues has been fixed for Ajmer Chapter for the year 2023 . It is noteworthy

that this Chapter has collected 305 transplantable corneas during 2023 as against 170 collected during 2022 .



Navigating Challenges: Opening New Collection Centres

Government of India launched "Blindness Control Programme" in the year 1976 to provide sight to the Visually Challenged (Blind) persons. Cataract is the most important cause of blindness. Second most important cause is corneal blindness. Very few organisation work for this cause.

Eye Bank Society of Rajasthan, established in the year 2002, is dedicated to spreading of awareness about Eye Donation and giving sight to Corneal Blind Persons. So far, the Society has collected about 22000 corneas, out of which 13971 corneas have been transplanted to restore sight of corneal blind persons. There are about 3 lakh visually challenged persons due to corneal opacity in the state. Thus, we are touching only a fringe of the problem. Therefore, efforts are to be increased manifold to address to this problem.

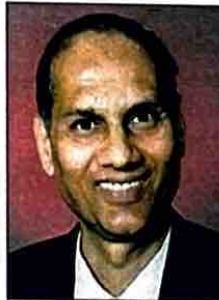
First important requirement for success of this programme is to increase availability of cornea as cornea cannot be manufactured in the laboratory. We are dependent upon human corneas only. There are following challenges in cornea collections:

- (1) There is lack of awareness about eye donation and on top of this, there are misconceptions.
- (2) Eye donors' family do not easily agree for eye donations due to various myths prevalent in the society. Those, who do, derive satisfaction that they have contributed to a pious cause of restoration of sight of corneally disabled person and blessings of corneal recipients. Getting consent for eye donation is a big challenge and not an easy proposition.
- (3) Corneas have to be retrieved within 6 to 8 hours of death and to be kept in preservative media in refrigerated conditions otherwise corneas become unsuitable for transplant.

Therefore, more Eye Collection Centres are to be established in the uncovered areas of the State. Such centres need to be opened in hospitals; as from

hospitals, more corneas can be collected and that too of better quality. Establishment and functioning of Eye Collection Centres pose challenges at every stage:

Identification of Hospital: For better results, Eye Collection Centres are necessarily to function from a hospital where mortality rate is sufficient to have viable eye collections. If the mortuary is located in the hospital, it is better, as in medico legal cases, more time is available for counselling of family members. Active support of the hospital staff is necessary, for information about each death, medical history of the patients and putting a word to family members besides providing a suitable place for the centre in the hospital.



Lalit Prakash Kothari
Secretary E.B.S.R.

Identification of Suitable NGOs: As hospital staff have little time for counselling, the centre needs to have a full-time trained eye donation counsellor cum technician to counsel family members for their consent and retrieval of corneas from the dead body. It is often difficult for single technician to talk to family members specially when they are under grief due to death of their dear ones. The members of NGOs are experienced one and can be of great asset in talking to the family members and obtaining consent. For success of the centre, the members of NGO should regularly visit the hospital for supporting technician, contacting hospital staff and taking up awareness activities in hospital & also in community.

Spreading Awareness About Eye Donation: There is lack of awareness about eye donation and on top of this, there are misconceptions. The family members are not in mood to listen to technician for eye donation, when they are under grief due to death of their dear ones. However if they are convinced of their social responsibility towards the corneal blind persons, chances of getting consent increase considerably. NGOs can organise regular eye donation awareness programme in colleges, public gatherings, community meetings, meetings of field functionaries and at places

where people gather for some purpose. Banner and posters can also be put up at important places.

Eye Donation Counsellor Cum Technician (EDCT): EDCT is a key person in the eye collection. However he faces many challenges in performing his duty. Some of them are given below:

Finding a suitable candidate: Most difficult part of the entire operation is finding a suitable person as EDCT. Though, basic qualification is only 12th pass but people with higher qualifications also apply for a job in the eye bank. However, on finding that job involves working on a dead body, counselling grieving family members and be constantly under review for performance evaluation, majority of the candidates backout. It is job which requires a person with compassion, socially oriented and will to help society also.

Scrutiny of Case As soon as he receives information about death of a person, the history of the patients is to be studied so as to identify suitable case. Only after the case is found suitable, then he can approach the bereaved family and proceed for counselling.

Counselling: EDCT is responsible for counselling the families. He must be committed to the cause of eye donation and must have good communication skills. He should have adequate knowledge about the facts and myths about eye donation. He should listen to the bereaved family members patiently and address the

fears & queries raised by the family members.

Retrieval of Cornea: EDCT should be properly trained for retrieval of corneas. He should also upgrade his training skills regularly and undergo refresher trainings so that his retrieval skills remain sharp. Any complacency or casual attitude may result in rejection of cornea which will not only make the entire work from notification to retrieval infructuous but also will deprive visually challenged persons from getting sight.

Documentation, Safe Storage and Transport: All documents are to be prepared, and corneas are to be sent, maintaining cold chain, to eye bank lab for evaluation. It has to be sent as early as possible to maintain its quality. In case, cold chain is not maintained, corneas may lose its quality and may be rejected. Documents are necessary for ascertaining its suitability besides, evaluation in lab.

Round the Clock Job: Notification of death can come at any time of the day so he must immediately scrutinise the case on phone and if suitable, then rush to the place for retrieval. He has to remain available round the clock.

Conclusion: Only tangible output of a technician is measured by the number of transplantable cornea provided by him. He is performing a difficult task. He needs constant support, guidance and morale boosting from the local NGO and hospital administration. His contributions need to be suitably recognized and he needs to be supported specially when results are poor.

ADVANCEMENTS AND TRAINING EXPOSURE FOR PROFESSIONAL GROWTH

Training for counselling and retrieval of cornea: Earlier, all persons selected for the post of Eye Donation Counsellor cum Technician were sent to LV Prasad Eye Institute, Hyderabad or Shroff hospital, New Delhi for training for counselling and retrieval of cornea. However from 1st January 2019, Eye Bank Society of Rajasthan has developed in house training facilities. Since then, all newly appointed technicians of the Society and technicians of other organisations, working in the State for Eye Donation, have been imparted training by the Society. So far, 30 technicians have been trained by the Society. During the current year, 10 persons have been trained for counselling and retrieval of

cornea. Moreover three Assistant Managers have also been trained in the current year.

Training exposure to Keratoplasty Surgeons: As a part of the Execution of "Blindness control Policy", SMS Medical College and Hospital has started training of Ophthalmology Surgeons for Keratoplasty. Eye Bank Society of Rajasthan is providing these surgeons exposure to eye banking.

Training exposure to DNB students: Dr. Virendra laser, Phaco Surgery Centre - Eye Hospital runs DNB course in Ophthalmology. Eye Bank Society of Rajasthan will provide their DNB residents externship for eye banking.

NEW INITIATIVES BY EBSR

The Eye Bank Society of Rajasthan is a registered charitable organization, established to help corneal blind persons to get sight and also to spread awareness about eye donation amongst public. With these twin objectives in mind, the society has taken many initiatives. Some of the important initiatives are given below:

Aziz Premji Philanthropic Initiative (APPI) Project : APPI has approved three years grant, from 1st January 2023 to 31st December 2025 of Rs. 86.92 lakh to support eye donation in the Eye Bank Society of Rajasthan. The Project focuses on reaching community for spreading awareness about eye donation and eye donation will be its outcome. Project will also support starting Eye Collection Centers at Bikaner and Sri Ganganagar and extending support for strengthening existing Eye Collection Centers at Ajmer.

Netradani Pariwar Samman Samaroh: The Eye Bank Society of Rajasthan, organised Netradani Pariwar Samman Samaroh on 19th March 2023. Families of 62 eye donors were felicitated in this programme. This will help in spreading awareness about eye donation and motivate people to volunteer for eye donation.

Tissue Digitization Software: Software has been developed for complete digitisation of the process from notification of death of a person till cornea is transplanted. We have started using this software for feeding data. This will not also facilitate the submission of information but also its storage, monitoring, report generation and data analysis much simpler.

Policy of Blindness Control: The Government of Rajasthan also issued a "Policy on Blindness Control" on 13.01.23. The policy aims at treating all treatable Corneal blind people must be treated free or at minimum cost with joint efforts of Government, Private Sector and NGOs. EBSR is the only eye bank to be empaneled by the Government of Rajasthan as a partner under this policy.

Help Desk: With permission of the hospital administration, a help desk kiosk is put up in reception area of the hospital where EBSR technician is present. People visiting hospital are told about eye donation and their queries are also answered. Pledge forms for eye donations are also filled up.

Redevelopment of EBSR New website: Our existing website was redeveloped using latest technology, better platform & software and is very user friendly. It contains all information about the Society, programmes, eye donation, progress reports, information about current activities both in form of text & photos/ videos and future programmes.

Cornea Evaluation: Presently Medical Director evaluates all Corneas. Our technician is under training for cornea evaluation. Once he successfully completes training, he will carry out evaluation work of corneas under overall supervision of the Medical Director.

Toll Free Number for Eye Donation Helpline and Its Publicity: We have unique toll-free number" for eye donation. Any person can dial this number and can contact nearest chapter for eye donation and other information.

Centre of Unfolding Learning Potentials (CULP): CULP has been implementing social development programmes in Tonk and Dausa districts of Rajasthan for the past 22 years. The EBSR is coordinating with CULP for spreading awareness about eye donation and also organising eye checkup camps in Dausa district

Sahayata Trust: The Trust is organising awareness camps for police stations on National Highways and social workers, to train the staff about life saving measures in case of traffic accidents. EBSR also joins these camps to explain the necessity of about eye donation to combat to provide vision to cornea blind persons.

New Eye Collection Centers: Following new Eye Collection Centers were opened in partnership with other organisations:

- EBSR Global Eye Collection Centre, Abu Road, Sirohi in association with Global Hospital Institute of Ophthalmology, Abu Road, Sirohi
- EBSR Lions Club Eye Collection Centre Bhilwara in association with Lions Club
- EBSR Tania Eye Collection Centre, Sri Ganganagar in association with Dr. S. S. Tania Medical College, Hospital and Research Centre, Sri Ganganagar
- Eye Collection Centre, Bikaner under AAPI Project
- Eye Collection Centre, Dausa under AAPI Project

- Lalit P. Kothari
Secretary-EBSR

23RD ANNUAL GENERAL MEETING OF EYE BANK SOCIETY OF RAJASTHAN

23rd Annual General Meeting of Eye Bank Society of Rajasthan was held on 8th October 2023. Shri B. L. Sharma, President EBSR, presided over the meeting. Highlights of the Annual General Meeting are given below:

Performance 2022-23 - Cornea Collections & Transplant: Our progress during year 2023-24 is 134% of targets. First time, we crossed the barrier of 500 transplants in a quarter. Our highest quarterly transplant was 514 in the last quarter of the Financial Year 2022-23. Moreover, we also crossed barrier of 200 monthly transplants in December 2022. Following table gives comparative position of corneas during last four years:

Year	2019-20	2020-21	2021-22	2022-23	
				Targets	Achievement
Collections	2086	892	1476	2000	2911
Transplants	1273	711	1046	1400	1879
Utilisation Rate	61%	80%	75%	70%	65%

Cornea Distribution: Corneal transplants in Government hospitals and private hospitals of the State are yet to attain pre Covid level. Due to this, number of corneas and percentage of supply of corneas through Central Distribution System (CDS) has increased substantially in the year 2022-23 which is evident from following table:

Year	2019-20		2020-21		2021-22		2022-23	
	Actual	%	Actual	%	Actual	%	Actual	%
Govt. hospitals	675	53%	175	22%	402	38%	612	33%
Private hospitals	242	19%	158	25%	186	18%	318	17%
CDS	356	28%	378	53%	457	44%	949	50%
Total	1273	100%	711	100%	1045	100%	1879	100%

Personnel matters:

- (a) Promotion of employees: All existing employees who were eligible for promotion, were promoted by upgrading the existing posts. 1 Manager, 1 Assistant Manager, 1 Senior Accountant and 3 EDCTs were promoted.
- (b) Pay Revision and Revision of Pay Scales: The Society made one time increase in pay w.e.f. 1st January 2023 as follows:
 - (i) Supervisory staff: 10% of existing pay with minimum increase of Rs. 3200/ per month.
 - (ii) Other staff - 15 % of existing pay.
 Subsequently Pay scales were also revised w.e.f. 1st January 2023.
4. Regulations: Following Regulations were notified repealing the earlier Regulations:
 - (i) Eye Bank Society of Rajasthan Employees (Personnel and Service) Regulations 22
 - (ii) Eye Bank Society of Rajasthan Eye Bank Society of Rajasthan (Travelling Allowance) Regulations 22
 - (iii) Eye Bank Society of Rajasthan Financial and Accounting Regulations 22

Audit report: Audit report for the Financial Year 2022-2023 was approved. Some of the salient features of Audit Report are given below:

- (a) Trust fund of the Society is at a level of Rs. 2,43,60,024/-, indicating increase of Rs. 66,94,653/-.
- (b) Corpus fund of the Society is at a level of 1,31,37,720/-, indicating increase of Rs. 4,23,111/-.
- (c) Our total receipts are Rs. 2,02,82,706/-, an increase of Rs. 1,03,41,033/- over last year. The Society received APPI Grant Rs. 24.99 lakhs and grants under CSR from RSMM Rs. 21 lakhs, RIICO Rs. 15 lakhs and Sri Ram General Insurance Rs. 5 lakhs.
- (d) Total expenses during the year are Rs. 1,35,88,253/- which are higher by Rs. 42,59,700/- over last year. Expenditure increased due to higher cornea collections, more awareness programmes and new items of expenditure; Rs. 2,23,219/- on donor's felicitation function, Rs. 2,45,204/- on redevelopment of existing Website and Rs. 4,85,304 on analysis of donor's data.

Programme for the Financial Year 2024-2025: Following annual programme was approved for the Financial Year 2024-25:

S. No.	Items	Targets
1	Cornea Collections	3300
2	Transplanted Corneas	(67%)2200
3	Utilization rate	67%

Conferment of Membership on New Persons: Following persons were conferred individual membership of EBSR on the following persons:

S. No.	Name	Field
1	Shri Rajeev Dasot	Retired IPS
2	Shri Ajaya Gupta	Retired IFS
3	Shri S. P. Verma	Social Worker
4	Smt. Unnati Gurbani	Social Worker

Incentive Scheme: To motivate staff, incentive scheme was announced which had positive impact on morale of the staff and our performance has shown promising trends. Due to excellent progress, we distributed Rs. 8,65,700/- as incentive during the year 2022-23 which is far more than Rs. 3,94,000/- distributed during the year 2021-22.

M. L. Mehta Best Chapter Award

M. L. Mehta Best Chapter Award was given as follows:

1. Jaipur Chapter: Trophy for outstanding performance and prize money of Rs. 50000/-.
2. Ajmer Chapter: Best chapter Trophy and prize money of Rs. 40000/-.
3. Kota C Chapter Runners Up and prize money of Rs. 30000/-.

Lalit Prakash Kothari
 Secretary, EBSR

आई बैंक - एक सामाजिक सरोकार

अंधता निवारण एवं आई बैंकिंग के क्षेत्र में भीष्म पितामह कहे जाने वाले, अनेक उपलब्धियों एवं पुरस्कारों से सम्मानित, एल. वी. प्रसाद आई इंस्टीट्यूट हैदराबाद के फाउंडर चेयरमैन डा. जी. एन. राव एक जानी-मानी शख्सियत है। पद्मश्री सम्मान से सम्मानित डॉ. राव का राजस्थान आई बैंक सोसायटी की स्थापना से लेकर आज तक विशेष स्नेह एवं सहयोग रहा है। प्रारंभ में ही आपके मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से स्वर्गीय श्री एम. एल. मेहता साहब एवं उनके सहयोगियों द्वारा वर्ष 2002 में राजस्थान में पहले आई बैंक की शुरुआत की गई थी।

दिनांक 7 दिसंबर 2023 एक सौभाग्य का दिन था जिस दिन डॉ. राव जयपुर में स्वर्गीय एम. एल. मेहता स्मृति व्याख्यान माला कार्यक्रम में शिरकत करने के लिए जयपुर आए हुए थे। सोसाइटी के अध्यक्ष श्री बी. एल. शर्मा साहब के प्रयासों से डॉ. राव अगले दिन प्रातः आई बैंक सोसाइटी के कार्यालय में पधारे। आई बैंक के कार्यों, उपलब्धियों एवं नवाचारों को जानने के लिए वे हमेशा उत्सुक रहे हैं। उस दिन उनका आगमन सभी सदस्यों के लिए बहुत ही खुशी का अवसर था। शर्मा साहब ने संक्षेप में आई बैंक की उपलब्धियों, नवाचारों एवं कार्य प्रणाली से उन्हें अवगत कराया। डॉ. राव ने वर्तमान नेतृत्व एवं सभी कार्यकर्ताओं को अब तक की उपलब्धि के लिए बधाई दी एवं खुशी जाहिर करते हुए बताया कि यह पहला स्वयंसेवी संस्था द्वारा संचालित बैंक है जो इतना अच्छा कार्य कर रहा है। अपने 2 दिन के प्रवास के दौरान अंधता निवारण, कॉर्निया कलेक्शन, देश में आई बैंक्स का भविष्य एवं इनकी कार्य प्रणाली के संबंध में उन्होंने बहुत सी ज्ञानवर्धक जानकारी से लाभान्वित किया।

इसका विवरण सभी की जानकारी के लिए यहां प्रस्तुत है।

स्वास्थ्य की देखभाल मानव विकास के लिए एक मूलभूत आवश्यकता है और यह संयुक्त राष्ट्र सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स (एस. डी. जी. का एक महत्वपूर्ण घटक है। एस. डी. जी. में से कई लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए स्वास्थ्य की देखभाल में वृद्धि हमारी क्षमता को प्रभावित करती है, फिर भी दुनिया का लगभग हर देश बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएं जुटाने में भारी चुनौतियों का सामना कर रहा है। यूनिवर्सल हेल्थ कवरेज दुनिया के कई देशों की आकांक्षा है और केवल कुछ ही देश इसे लागू करने में सफल हो पाए हैं, हालांकि इसे प्राप्त करने की सर्वाधिक जिम्मेदारी सरकार की है लेकिन इसे साकार करने के लिए बड़े पैमाने पर नागरिक भागीदारी भी आवश्यक है। भारत में बड़ी संख्या में समाजसेवी नागरिक

संगठन है जो स्वास्थ्य की देखभाल सहित कई रोगों में सरकार के लिए प्रमुख सहायक की भूमिका निभाते हैं। ऐसे उद्देश्यों को साकार करने और ऐसे संगठनों का नेतृत्व करने के लिए सक्रिय सहयोग आवश्यक है।

कॉर्नियल ब्लाइंडनेस की बात करें तो आपको जानकर आश्चर्य होगा कि भारत में सर्वाधिक दृष्टि दोष के केसेस हैं। कुल 8.3 मिलियन पूर्ण दृष्टि दोष एवं 4 मिलियन गंभीर दृष्टि दोष से ग्रसित लोग भारत में हैं। 1.3 मिलियन कॉर्नियल ब्लाइंडनेस के केसेज भारत में हैं। सबसे ज्यादा अंधता या आंशिक दृष्टि दोष आर्थिक सामाजिक रूप से कमजोर समूह,

महिलाओं, ग्रामीण क्षेत्र एवं कठिन भौगोलिक क्षेत्र के निवासियों में पाया जाता है। पूर्ण दृष्टि दोष एवं आंशिक दृष्टि दोष के प्रमुख कारण समय पर आंखों की जांच नहीं करवाना, थोड़ा दृष्टि दोष होने पर चश्मा नहीं लगाना, मोतिया बिंदु, ग्लूकोमा, डायबिटीज, बढ़ती उम्र के साथ मांसपेशियों का कमजोर होना एवं सर्जिकल गलतियां आदि प्रमुख कारण हैं। इस प्रकार की अंधता को रोका भी जा सकता है एवं इलाज भी समय पर किया जाए तो दृष्टि दोष को भी कम किया जा सकता है। अंधता को

रोकने के लिए किए जाने वाले प्रयासों में सबसे महत्वपूर्ण स्वास्थ्य संबंधी एवं अंधता की रोकथाम संबंधित जानकारीयां साझा करना, जिसके अंतर्गत समय पर मीजल्स का टीका, विटामिन सप्लीमेंट्स, गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक एवं विशिष्ट स्वास्थ्य एवं आधुनिकतम मेडिकल उपचार की व्यवस्था- जिसमें सर्जरी एवं मेडिकल दोनों सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए जिससे कि दृष्टि दोष एवं अंधता के बढ़ते केसेस को रोका जा सकता है।

आई बैंकिंग सिर्फ सरकार या किसी आई बैंक के संस्थापक की जिम्मेदारी नहीं है बल्कि पूरी कम्युनिटी की जिम्मेदारी है। एक अच्छे आई बैंक के संचालन के लिए आधारभूत आवश्यकताओं में बेहतरीन ढांचा, कुशलता पूर्वक संचालित कार्य प्रणाली, संबंधित व्यक्तियों समुदाय के लोगों एवं विभिन्न सहयोगी संस्थाओं के साथ सामंजस्य पूर्ण व्यवहार महत्वपूर्ण कारक है। सभी आई बैंक्स कॉर्निया कलेक्शन के लिए हॉस्पिटल कॉर्नियल रिट्रीवल प्रोग्राम (एच. सी. आर. पी.) जिसके अंतर्गत अस्पताल में होने वाली मृत्यु, मोर्चरी के मेडिकल लीगल केसेस, मृतक परिवार की ओर से नेत्रदान करने की पहल, जनचेतना जागृत करने के विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन, समुदाय



उषा बापना
संयुक्त सचिव, ईबीएसआर

Donate Your Eyes.....Help Combat Corneal Blindness

Innovative Awareness Approaches .

A finding of the recent global survey performed on eye banking and corneal transplantation computed that there is a wide gap between demand and supply of corneas worldwide. The disconnection between the large number of people who expressed willingness to donate and the scarcity of individuals who have pledged their eyes for donation could be addressed through educational media campaigns, collaborations with medical personnel, partnerships with grief counselors and religious leaders, the use of social media, and educational sessions with medical students and staff. Personal experiences create solid beliefs, and public opinion cannot be impacted for the better until we emphasize on known examples in our communities. Examples of prominent members of society or celebrities who have pledged or donated their eyes can be used to inspire others to do the same. The message delivered by the religious leaders and Dharam Gurus has a surmounting impact on the people. If our prime minister talks about the importance of eye donation on the widely viewed TV program "Man ki baat," it is bound to touch millions at a time.

Aggressive and innovative awareness campaigns can be run during the National Eye Donation Awareness Fortnight, which is held between August 25 to September 8. The energetic youth can be channelled to become Jyoti Mitra. We can have NCC/Scout-Guide rallies, with the cadets holding the banners of our society. Their impact and presence can have a marked impact on the public. There are some curriculums, where grades are given for social service to the students. We can hold awareness programs in colleges and institutions to motivate them to devote some time to the awareness activities so that they benefit academically too. They can proactively lead in families, neighborhoods, and residential societies to inspire people to pledge and donate their eyes. Special badges can be created for the Jyoti Mitra, giving them due regard. We must also plan to install our help desks during fairs, exhibitions, seminars, etc. Awareness programs

must be periodically held in Police training institutes, and eye donation should be a part of their curriculum. Awareness sessions can be held at clubs, parks, social organisations and residential societies; where we can get pledge forms signed too.

Awareness campaigns have to be run throughout the year. The eye bank officials or staff can address the **Tiye ki baithak**, giving the certificate of honor to the family of the deceased. It's a mark of gratitude and appreciation for them. During Baithak, after getting consent from the family, we could explain the importance of eye donation and its process. At this time, the mind is silent and in an altogether godly frame, and whatever is talked about touches us very deeply. HCRP is the main source from which we get cornea; the staff of the wards and mortuary must be motivated to give notifications timely and also help in counseling. We can even think of rewarding them in a suitable manner and appreciating their efforts. Extraordinary paramedical staff can be invited to our annual functions, so their self-esteem is in an upward swing. Similarly, police personnel play a crucial role during post-mortem. They can be motivated in the task of counseling too and requested to help speed up post-mortem for the MLC cases since time is very crucial during eye donation.

The Eye Banks must review and, with due research, analyze the potential and expand its work arena to other new hospitals (pvt and govt) too. Eye bank helpdesks must be periodically set up at prime hours, when there is heavy footfall of patients, in order to spread more awareness and publicity.

Allied health science and paramedical students are the future of our healthcare system, since they will be the pillars that sustain it, and their degree of knowledge and awareness is crucial in promoting eye donation. To overcome the scarcity of eye donors, a 3-tier community system has been proposed for India, and these are eye



Anju Jain
Member,
working Committee-EBSR



collection centers, eye banks, and eye bank training centers that are responsible for collecting, processing, and allocating tissue and creating public awareness as well as training and skill enhancement of eye banking personnel.

The EDCs are the backbone of the eye bank; it's very important they are happy, healthy, and satisfied. Upon them lies the future of the eye bank; they are the ones who are responsible for cornea retrieval. Their salary should be optimum and modest, and the working environment at Eye Bank should be cordial and friendly. Their issues should be addressed duly, so their performance is more productive and they develop a close affinity with the eye bank. Due incentives and credit should be granted to them when they excel in their work. The targets set for them should be manageable and reviewed periodically. We can also introduce welfare schemes for the betterment of their families. . During this fast pacing computer age, the majority of the participants stated that the media is their primary source of information. Social media platforms like Facebook, Instagram, YouTube, and television can have a wide reach across a wide cross-section of society. Here, we also have the option of setting our target viewers. Testimonials of the donor families and the success stories of the corneal recipients must be posted on social media. It's encouraging as well as inspiring to listen to real-life experiences. Catchy slogans can be framed, and impressive hoardings and banners of Eye Bank must be installed at places with a heavy footfall of the public, like temples, funeral grounds, bus stands, railway stations, etc. The toll-free number of the eye banks must be popularized. Although many people say they would be willing to pledge as an eye donor, the question still remains as to how many donations would follow when the time came, given the societal norms that act as barriers. India, an inherently traditional society, deems the familial unit to be a sacred institution. Many pledges may not be translated into transplants if they are left to the discretion of relatives. We take pride in family ties and social norms instilled in us by our cultural heritage, but they are inevitably a major impediment to an effective increase in donation rates. The superstitious beliefs and myths that the rural and uneducated population face are a major roadblock to eye donation. The influential people of society and our Eye Bank members and the person in charge must

guide them to get over such beliefs and become more responsible. Regular camps and awareness sessions must be organized at the grass-roots level. Special privileges and compensation must be announced by the government and semi-government institutions and given to Netradaani Parivar. We have to make eye donation our family tradition; nobody should be burned or cremated without eye donation, similar to what happens in Sri Lanka. The government can issue a scheme; when the forms are filled out for the application of a driving license, there should be a column asking whether the person wants to be an eye donor! If the deceased has ticked yes, then, especially for MLC cases, it gives assurance to the family as well as the eye bank to easily get the cornea.

Combating corneal blindness is the primary aim of the Government and the eye bank, thus it's crucial to know how many recipients have got vision and where the problem lies. Their after care is of a major concern, especially of those patients who come from an uneducated background. Netradaan Salhakars should be appointed in Government hospitals, who can remind them of regular check ups and the importance of after care. The records of the patients aren't maintained properly. It's important that the administration pays due attention to it, because if



the people don't get vision post surgery, the basic mission of imparting vision to the blind can not be met. . The families that donate the eyes of their family members must be given due regard. It's a selfless act, and such people must be given due reverence. Our Eye Bank has been holding felicitation ceremonies to honor and give regard to such families. A certificate of appreciation is granted to them by the distinctive citizens of the state. A lot of publicity is done after such events, so others too feel inspired to follow in their footsteps. The significance of eye donation, eye banking, facts and myths, etc. must be included in the high school syllabus; thus, the children understand it and groom themselves to become Jyoti Mitra. They can grow into responsible citizens and volunteer to promote eye donation.

LET US ALL GET TOGETHER TO MAKE THE BLIND SEE THE COLORS OF THIS BEAUTIFUL WORLD. "ONE EYE DONATION CAN GIVE VISION TO TWO PEOPLE."

"Elevating Excellence: Eye Bank Society of Rajasthan's Annual Chapter Audits and Quality Initiatives"

In its unwavering pursuit of excellence, the Eye Bank Society of Rajasthan places a strong emphasis on accountability and adherence to high professional standards. This commitment is exemplified through the annual chapter audits conducted across the state. Led by Senior Manager Sudershana Shekhawat, Assistant Manager Bharat Sharma, and Deputy Manager Pulkesh in 2023, these audits focused on various chapters, including Bikaner, Sriganganer, Ajmer, Kota, BBJ, Alawar, Dausa, Udaipur, Bhilwara, Pali, and Jodhpur.

Audit Focus Areas:

Documentation, Record Keeping & Reporting: The audit process prioritizes the meticulous review of documentation related to the collection process, encompassing consent forms, donor information, and necessary permits. Monthly Performance Reports are scrutinized for accuracy and timely submission to the head office.

Collection Process: Thorough inspections ensure that the collection process occurs in a sterile and safe environment, strictly adhering to established protocols.

Equipment and Facilities: The maintenance of equipment and facilities used in the collection process is verified to guarantee a sufficient number of well-maintained and calibrated instruments meeting appropriate standards.

Availability of Consumables: Audits confirm the availability of consumables, such as sterile containers, preservation media, and other supplies, ensuring they are not expired and are readily accessible.

Inventory Management: Effective inventory management systems are reviewed to monitor and replenish supplies, instruments, and consumables as required.

Presence in Collection Hospitals: Distribution and presence of eye collection centers in hospitals are assessed to ensure accessibility and efficiency. Awareness materials in working areas promote awareness and encourage eye donation.

Trained Eye Donation Counsellor cum Technician (EDCT): The competence of EDCT is evaluated to ensure they are adequately trained in roles such as providing information to potential donors, obtaining consent, and handling technical aspects of specimen collection.

Quality Control: The audit assesses the quality control measures in place to monitor the quality of collected specimens, including checks for contamination or damage.

Initiatives for Enhancing Quality in Tissue Retrieval and Transplantation: The Eye Bank Society of Rajasthan is unwavering in its commitment to advancing the quality of tissue retrieval and transplantation processes. The society has implemented several pivotal initiatives aimed at achieving this goal. A primary focus is on the continuous

training and development of staff involved in the collection process. Ongoing training programs ensure that the personnel stay abreast of the latest techniques and standards in eye donation procedures. This commitment to skill enhancement not only fortifies the competency of the team but also contributes to the overall efficiency and effectiveness of the retrieval process.

Collaboration stands as another cornerstone of the society's strategy. By strengthening partnerships with medical institutions through regular workshops, seminars, and knowledge-sharing sessions, the society creates a platform for collective learning and adherence to the highest quality standards. This collaborative approach taps into the wealth of knowledge within medical institutions, further bolstering the society's ability to maintain excellence in its operations. The society places a strong emphasis on donor screening protocols to ensure the optimal quality of retrieved tissues. This initiative is pivotal in minimizing the risk of transmitting infections or diseases through transplants, underscoring the society's dedication to the safety and well-being of both donors and recipients.

Technological advancements also play a crucial role in the society's pursuit of excellence. By exploring and integrating advanced technologies in the tissue retrieval and transplantation processes, the society aims to enhance precision and efficiency throughout the entire workflow. This forward-thinking approach reflects a commitment to staying at the forefront of developments in the field.

The implementation of a specialized quality assurance team involves their responsibility for the ongoing monitoring and evaluation of the entire process. This team actively performs regular internal audits and suggests improvements based on their assessments. This proactive approach to quality assurance guarantees a continual cycle of evaluation and enhancement, reinforcing the organization's commitment to achieving excellence.

Transparent communication channels are actively maintained within the society, fostering an environment where staff members, different chapters can openly report any issues or challenges faced during the tissue retrieval and transplantation processes. This commitment to transparency creates a culture of accountability and collaboration, enabling prompt resolution of issues and continuous improvement of practices.

This multifaceted approach of the Eye Bank Society of Rajasthan, encompassing training, collaboration, screening, technology integration, quality assurance, transparent communication, and a responsive feedback mechanism, reflects a dedicated commitment to advancing the quality of tissue retrieval and transplantation processes in the field of eye donation.

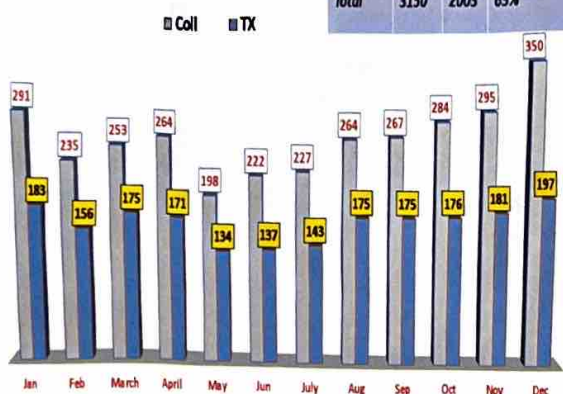


Sudershana Shekhawat
Sr. Manager, EBSR

Annual Performance Insights and Achievements-2023

In the realm of eye care, the annual performance report for corneal transplantation serves as a vital metric to gauge the success and growth of a medical facility. In 2022, our organization collected 2684 corneas, successfully transplanting 1704 with a Utilization Rate (UR%) of 63%. Building upon this foundation, the year 2024 marked a significant leap forward, witnessing the collection of 3150 corneas and the successful transplantation of 2003 corneas, achieving an improved UR% of 64%.

Progress Report Jan-Dec 2023



Quarter wise Performance - 2022 VS 2023

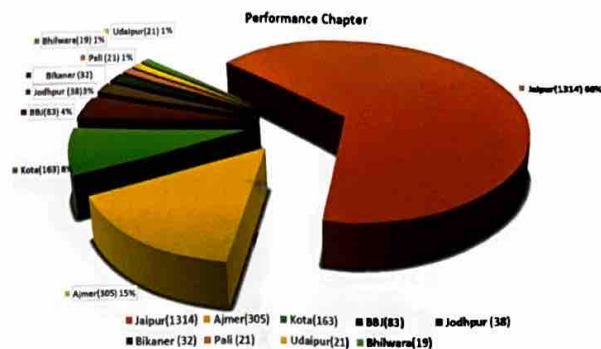
QUARTER	2022			2023		
	COLL	TX	UR%	COLL	TX	UR%
Q1	552	339	61%	779	514	66%
Q2	683	454	66%	684	442	65%
Q3	654	410	63%	758	493	65%
Q4	795	501	63%	929	554	60%
GRAND TOTAL	2684	1704	63%	3150	2003	64%

Chapter-wise Contribution:

Examining the chapter-wise contribution, Jaipur emerged as a pivotal contributor, responsible for 67% of the transplanted corneas, totalling 1314. Ajmer followed with a commendable 16% contribution (305), while Kota, BBJ, and other chapters shared the remaining 17%. Notably, Bikaner, Pali, Jodhpur, Bhilwara, and Udaipur collectively contributed only 5% to the transplant ratio.

Eye Donation Counsellor cum Technician Performance:
The performance of our dedicated Eye Donation Counsellor cum Technicians (EDCT) played a crucial role in achieving

Chapter wise contribution: Jan-Dec 2023



these milestones. In the year 2023, notable advancements were observed. Omprakash Edct (Jaipur): Collected 600 corneas, transplanting 395 at an impressive UR% of 66%. His contribution accounted for 20% of the total, marking a substantial increase of 186 corneas from the previous year. Mukesh (Jaipur): Collected 482 corneas, transplanting 339 with a UR% of 70%, maintaining a high level of efficiency. Ramswaroop: Collected 348 corneas, transplanting 245 with a UR% of 70%. While falling short of his previous tissue collection, his performance remains commendable. Bharat Kumar Sharma (Ajmer): Collected 230 corneas, transplanting 167 at an impressive UR% of 73%. His transplant numbers increased by 75 compared to the previous year. Kuldeep: A standout performer, contributing 156 corneas with an exceptional UR% of 88%. His dedication resulted in a remarkable increase of 75 corneas from the previous year. Tinku Ojha (Kota): Collected 304 corneas, transplanting 163 at a UR% of 54%. Tinku demonstrated notable improvement by contributing 15 more corneas than the previous year. Dr. Kulwant(BBJ): Collected 190 corneas, transplanting 84 at a UR% of 44%. While his UR% is lower, his contribution remains essential to the overall performance

COUNSELOR-WISE ANNUAL PERFORMANCE -2023

Counselor	Collection	Transplant	U.R(%)	Contribution
Omprakash	600	395	66%	20%
Mukesh	482	339	70%	17%
Ramswaroop	348	245	70%	12%
Prahlad	415	306	74%	15%
Amit	26	16	62%	0.7%
Bharat Sharma	230	167	73%	8.3%
Kuldeep	156	138	88%	6.8%
Tinku Ojha	304	163	54%	8%
Naveen Udaipur	26	14	54%	0.6%
Saksham	17	7	41%	0.3%
BBJ	190	84	44%	4%
Pali	50	21	42%	1%
Kunaram (Jodhpur)	106	38	36%	1.8%
Deepak (Bhilwara)	53	18	34%	0.8%
Sunil (Lions Bhilwara)	08	01	13%	0%
Hemant (MB Hospital)	30	05	17%	0.2%
Ramjan	77	32	42%	1.5%
Basanti (Abu road)	04	02	50%	0.09%
Ankit	02	0	0	0
Bharat Berwa(Dausa)	06	0	0	0

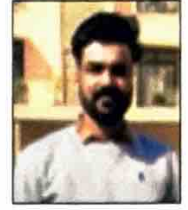
ANNUAL TOP PERFORMER - 2023



Om prakash
Jaipur
Coll 600 Tx. 395
UR:66%



Bharat Sharma-Ajmer
Coll230 Tx. 167 UR: 73%
*Meeting his monthly
targets throughout the year



Tinku Ojha - Kota
Coll : 304 Tx:163 UR:54%
*Meeting his monthly
targets throughout the year

The annual performance report showcases a commendable trajectory of growth and efficiency in corneal transplantation. Through strategic efforts and the dedication of our team, we have not only exceeded previous milestones but also set higher

standards for the future. The collaborative efforts of our chapters and the exemplary performance of our EDCTs reinforce our commitment to advancing eye care and enhancing visibility in the field of corneal transplantation.

Sudershana Shekhawat
Sr. Manager, EBSR

दान में प्राप्त कॉर्निया

माह	कॉर्निया संग्रहण	कॉर्निया प्रत्यारोपण	प्रत्यारोपण उपयोगिता दर
अक्टूबर	284	176	68%
नवम्बर	295	181	62%
दिसम्बर	350	197	56%
कुल संख्या	929	554	186

List of Financial Donors-(October to December 2023)

S.No.	Name of Donor	Amount (In Rs.)	S.No.	Name of Donor	Amount (In Rs.)
1.	Sh. B.L. Sharma	55000	12.	M/s Chandra Prakash Verma	10000
2.	Ms. Kamal Pangariya	51000	13.	Sh. Nagendra Kumar Jain	10000
3.	Sh. Suresh Chand Mehta	31000	14.	Sh. Gaurav Sharma	11000
4.	Sh. Rajendra Singh Bhandari	21000	15.	Sh. Sajjan Singh Choudhary	11000
5.	Smt. Usha Bapna	21000	16.	Sh. C.L. Dua	5100
6.	M/s Ramesh Agro Service Center (Sh. Ramesh Chandra Sharma)	21000	17.	Sh. Haricharan Singhal	5000
7.	Smt. Maya Tandon	20000	18.	Smt. Madhur Bhasini Rehani	5000
8.	M/s Mahadeo Bhomrajka Trust	11000	19.	Smt. Kamla Mehta	5000
9.	M/s Goyal Charitable Trust	11000	20.	Ms. Mridula Dugar	4000
10.	M/s Indian Weaves Wear LLP	11000	21.	Sh. Shyam Sunder Bissa	3500
11.	M/s Gaurav Sharma	11000	22.	Management Development Academy	3100
				Total	336700

Nationwide Reach: EBSR-Distribution Programme

We know how Cornea is an essential part of Eye to restore the vision of corneal blind persons. As per Hindustan Times Report of March 2017, there are about 12.5 million corneal blind persons in India and 3 lakh Corneal blind persons in Rajasthan itself.

EBSR is working with the Vision to eliminate corneal blindness in Rajasthan and help its reduction in India. EBSR is one of the top Eye Bank in India. To fulfill the vision, EBSR has now been providing corneas to all HOTA registered Govt. Hospitals, Charitable Hospitals and Pvt. Hospitals. EBSR facilitates corneas to 10 major cities of Rajasthan (Ajmer, Banswara, Bikaner, Bhilwara, Jaipur, Jodhpur, Kota, Sikar, Sri Ganganagar and Udaipur)

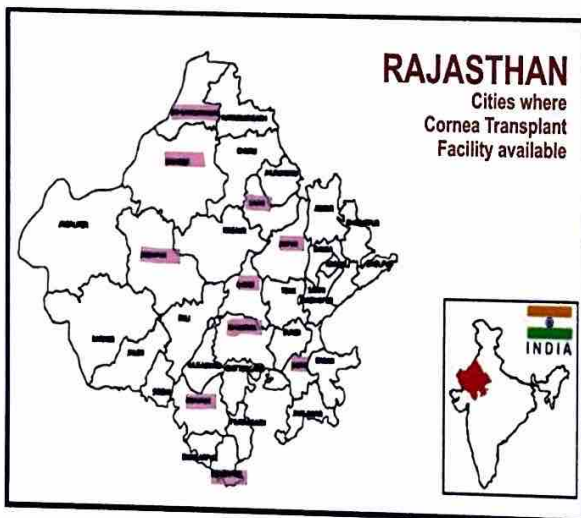


Pulkesh Sharma
Asstt. Manager, EBSR

To send corneas safely and timely at distance places in India Buses, Trains and Airways are used. A special order has been circulated with the help of Rajasthan-Government for the smooth transportation of cornea to the surgeon. Special packaging process is done for corneas which protect cornea from external environmental factors. Timing is the most important part to maintain the quality of tissue, we ensure that tissues are served to the surgeons at an appropriate time.

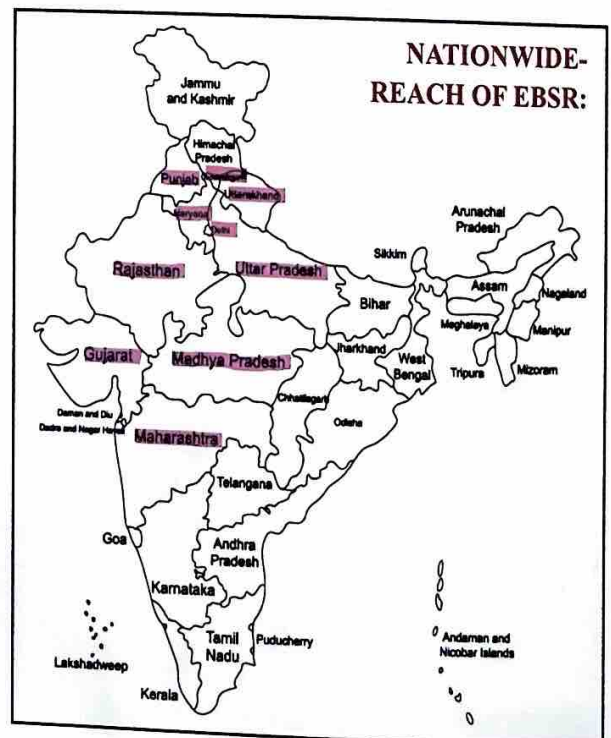
Process of Tissue-Distribution: A New initiative has been taken aimed at optimizing tissue distribution within the healthcare system of Rajasthan. The availability of tissues for surgeries is crucial, and it is imperative that we ensure a fair and equitable tissue distribution system that maximizes utilization of the available resources.

We are implementing a priority-based tissue distribution system that prioritizes Government

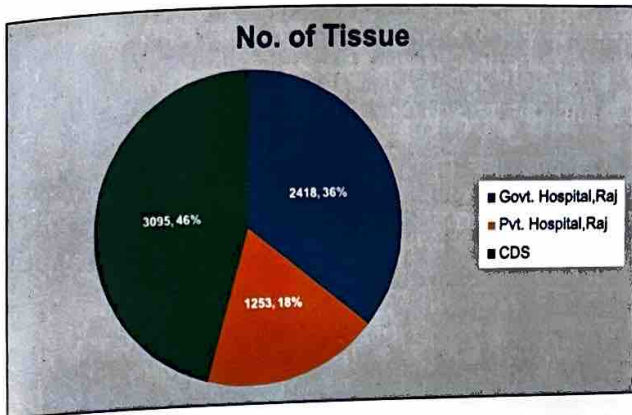


where the facilities of keratoplasties are available.

Outside Rajasthan, EBSR facilitates 9 states: Delhi, Uttar-Pradesh, Madhya-Pradesh, Haryana, Punjab, Chandigarh, Gujrat, Uttarakhand, and Maharashtra to provide corneas to 30 cities of these states through a system of CDS (Cornea Distribution System) which is developed by EBAI and Sight Life International.



Five Years Tissue Distribution from 2019-2023:



Hospitals in Rajasthan, followed by Private hospitals in Rajasthan, and finally, through the Cornea Distribution System (CDS) for hospitals outside Rajasthan. This approach aims to ensure that tissues are efficiently distributed within the state before considering distribution to other regions thus reducing the likelihood of expiry and wastage.

Two What's App Group have been created EBSR-Raj. Cornea Group and EBSR-Cornea Group for tissue Distribution for Government and Private hospitals in Rajasthan respectively. A detailed

information of Tissue shared in this groups for surgeons in which surgeons select the suitable tissue for their patients, tissues are allotted on the first come and first serve basis.

Our system is designed to be transparent, fair, and equitable. By prioritizing government hospitals, we aim to fulfill the healthcare needs of all citizens, irrespective of their economic status, Private hospitals in Rajasthan also have access to tissues based on their patient requirements ensuring that quality healthcare is accessible across the board. Additionally, the inclusion of the Cornea Distribution system (CDS) for hospitals outside Rajasthan enables us to extend our commitment to saving tissues from expiry by providing them to regions where they are needed.

This system not only ensures the efficient allocation of tissues but also provides equal opportunity to surgeons for these vital resources.

Pulkesh Sharma
Asstt. Manager, EBSR

As an NGO, we have some limitations, using the maximum utilization of minimum resources, EBSR have been trying to provide cornea to the needy persons not only in Rajasthan but also in other parts of India, where facilities of keratoplasty available and we are capable of send corneas safely and timely.

Unveiling a world beyond darkness, Our mission, steadfast and endless. Wandering through the paths of compassion, until every corneal blind person regains its vision.

From dawn's first light till twilight call, we'll strive, undeterred, to touch them all. With hearts ablaze, as we push ahead, no blind soul shall be left unfed in our country.

बूंदी-बारां एवं झालावाड़ चेप्टर

जनवरी से दिसम्बर 2023 में, ईबीएसआर के बीबीजे शाइन इंडिया चेप्टर द्वारा बूंदी के कई सरकारी एवं निजी विद्यालयों में विद्यार्थियों के साथ नेत्रदान जागरूकता कार्यशालाएं आयोजित की गईं।

बारां एवं झालावाड़ क्षेत्र में कार्यशालाओं के माध्यम से वर्ष भर में 13000 से अधिक बच्चों को नेत्रदान से संबंधित सभी आवश्यक जानकारी दी गई। कक्षा 10वीं और 12वीं के बच्चों को बाल ज्योति मित्र बनाया गया। शाइन इंडिया द्वारा उन्हें नेत्रदान से संबंधित एक कार्य प्रारूप दिया जाता है, जिसे निर्धारित समय में पूरा करने के बाद बच्चों को स्कूल में आयोजित एक समारोह में सम्मानित किया जाता है।

इसके साथ ही प्रशासनिक अधिकारियों, सामाजिक संगठनों और शहर के प्रतिष्ठित लोगों के साथ नेत्रदान विषय पर लघु सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यशालाओं के बाद सभी स्कूलों में नेत्रदान से संबंधित जागरूकता पंपलेट बांटे जाते हैं और बच्चों से कार्यशाला में दी गई

जानकारी से संबंधित प्रश्नों के उत्तर भी पूछे जाते हैं। सही उत्तर देने वाले बच्चों को संस्था की ओर से शाइन मेडल दिया जाता है।

संस्था 2012 से स्कूलों में नेत्रदान जागरूकता का कार्य कर रही है। समय-समय पर निदेशक शिक्षा विभाग के माध्यम से सभी स्कूलों के लिए नेत्रदान, अंगदान एवं जागरूकता कार्यशालाएं आयोजित करने के आदेश जारी किये गये हैं। बीबीजे चेप्टर एवं शाइन इंडिया फाउंडेशन के सहयोग से अब तक 450 से अधिक सरकारी एवं निजी विद्यालयों में नेत्रदान जागरूकता कार्यशालाओं के माध्यम से दो लाख से अधिक विद्यार्थियों को जागरूक किया जा चुका है।

डा. कुलवंत गौड़
कॉर्डिनेटर, बूंदी-बारां-झालावाड़ चेप्टर
ईबीएसआर



श्रीगंगानगर कलेक्शन सेंटर की रिपोर्ट

श्रीगंगानगर में नेत्रदान कार्यक्रम का शुभारंभ करने के लिए टांटिया आई कलेक्शन सेंटर की स्थापना के बाद शहर की जनता में नेत्रदान के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए जागरूकता के कई कार्यक्रम आयोजित किये जिनमें विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के साथ मिलकर जनता को नेत्रदान के लिए प्रेरित किया जाता है। अनेक जगह धार्मिक कार्यक्रमों में संस्था से जुड़े कार्यकर्ता भाग लेकर नेत्रदान की चर्चा कर प्रेरित करते हैं।

इस वर्ष गंगानगर में भी नेत्रदान जागरूकता पखवाड़े के दौरान अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गये। गत 16 दिसंबर को टांटिया मेमोरियल आई डोनेशन अवेयरनेस सोसायटी की बैठक हुई जिसमें टांटिया यूनिवर्सिटी के वाइस चेयरमैन डॉक्टर मोहित टांटिया ने विचार व्यक्त किये।



अध्यक्षता आई बैंक सोसायटी ऑफ राजस्थान जयपुर की वरिष्ठ प्रबंधक सुदर्शना शेखावत और अवेयरनेस सोसायटी के मुख्य सलाहकार वेद प्रकाश लखोटिया ने की। इस अवसर पर “बनिए अंधेरे का विकल्प, लीजिए नेत्रदान का संकल्प” पोस्टर का विमोचन किया गया।

कलेक्शन सेंटर से पहला नेत्रदान श्री गंगानगर हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी निवासी चंपा देवी होलानी तथा दूसरा नेत्रदान जवाहर नगर निवासी सुलोचना देवी झांझरिया से प्राप्त हुए चारों कॉर्निया जयपुर भेजे गए। दोनों ही नेत्रदानी परिवारों को सम्मानित भी किया गया।

सुमेश शर्मा
प्रोजेक्ट डाइरेक्टर
टांटिया आई कलेक्शन सेंटर
श्रीगंगानगर

नेत्रदाताओं की सूची

क्र.स.	नाम	पता	क्र.स.	नाम	पता	क्र.स.	नाम	पता
अक्टूबर, 2023								
1.	प्रियंका कुमार, मथुरा		50.	जशन लालवानी, जयपुर		100.	पायल साहनी, बिहार	
2.	राजेश कुमार, भरतपुर		51.	सुन्दरी देवी जेठवानी,		101.	कैलाश स्वरूप अग्रवाल, अजमेर	
3.	बन्धू, भरतपुर		52.	दर्शन कुमार, कोटा		102.	तरुण मघानी, किशनगढ़	
4.	अरविन्द तनवार, अजमेर		53.	श्रीमती नीता शर्मा, अजमेर		103.	महावीर जैन, नैनवा	
5.	रोहित जांगिड़, जयपुर		54.	आरिफ हुसैन, टोंक		104.	शेखर, हाटी चावड़ा, बुरान	
6.	दिनेश जांगिड़, चूरू		55.	सौरव जैन, अजमेर		105.	राधेश्याम पंचोली, रामगंजमण्डी	
7.	उदय सिंह मीणा, करौली		56.	शांति लाल पीपाड़ा, किशनगढ़		106.	गजानंद जाजोरिया, जयपुर	
8.	विमला, भरतपुर		57.	अजित सिंह रावत, अजमेर		107.	उमेश कुमार सोनी, भीलवाड़ा	
9.	सुनील सिंह, आगरा		58.	प्रकाश जटोलिया, अजमेर		108.	रामदुलारी, जयपुर	
10.	मधुसूदन गोगरिया, जयपुर		59.	दीपक कोली, किशनगढ़		109.	गणेश कुमार सैनी, झुंझुनूं	
11.	दालचन्द कांकरिया, बीकानेर		60.	गौरी शंकर सिंह रावत, रायपुर		110.	दामोदर सैनी, दौसा	
12.	मधु गुप्ता, अजमेर		61.	ओम प्रकाश मेहरा, अजमेर		111.	सुधीर कुमार जैन, कोटा	
13.	राजेश विजय, जयपुर		62.	जैनाश तनवार, अजमेर		112.	महरी देवी, अलवर	
14.	विद्या शर्मा, जयपुर		63.	शंकरलाल लुधानी, अजमेर		113.	सरस्वती देवी तनवानी, कोटा	
15.	कमलेश, भरतपुर		64.	जगन्नाथ राठौड़, बारां		114.	रजितराम, जोनपुर	
16.	गिरधारी लाल नागपाल, कोटा		65.	प्रवीण मौर्य, जयपुर		115.	शीशपाल, जयपुर	
17.	ललित चन्द भूतोरिया, कोटा		66.	लाला राम गुर्जर, अजमेर		116.	मंजू, चूरू	
18.	रामप्रसाद सैनी, जयपुर		67.	शिवदेवी, धौलपुर		117.	कृष्णा देवी, राजगढ़	
19.	हंसराज भील, जयपुर		68.	सुनिल मेहरा, जयपुर		118.	गोविन्द प्रसाद, अजमेर	
20.	चांद बिहारी, जयपुर		69.	निर्मल सिंह, रामगंज मंडी		119.	सुनील कुमार कश्यप, अजमेर	
21.	अब्दुल रसीद, जयपुर		70.	बाबूलाल मीणा, जयपुर		120.	तूफान, दौसा	
22.	राजूलाल बैरवा, जयपुर		71.	कमलेश देवी, मथुरा (यू.पी.)		121.	पपेटा देवी, कोटपूतली	
23.	कमल चौधरी, जयपुर		72.	विनोद यादव, महेन्द्रगढ़, हरियाणा		122.	मंजू कुमारी, धौलपुर	
24.	जशराज मीणा, दौसा		73.	रोशन लाल, उदयपुर		123.	नीला मूलचंदानी, जयपुर	
25.	पुष्पा सचदेवा, जयपुर		74.	दशरथ सिंह, राजपुरा धोद, सीकर		124.	आनंदी लाल नागर, कोटा	
26.	नेहा शाह, जयपुर		75.	हीरा देवी, भरतपुर		125.	महेन्द्र कुमार जैन, कोटा	
27.	रुबिना, टोंक		76.	आरव शर्मा (गोविन्द), फिरोजाबादा (यू.पी.)		126.	चन्द्री देवी, सीकर	
28.	मंजू देवी, जयपुर		77.	बाँबी धाकड़, करौली		127.	राकेश कुमार, झुंझुनूं	
29.	पिन्दू रैदास, अजमेर		78.	उर्मिला देवी, जयपुर		128.	नरेश, जयपुर	
30.	राजेश प्रजापत, जयपुर		79.	राम सिंह, बहरोड		129.	राजेश, जयपुर	
31.	बुद्धिप्रकाश श्रीवास्तव, जयपुर		80.	प्रफुल्ल कुमार, उदयपुर		130.	तारा देवी ललवानी, जयपुर	
32.	प्रेमवती, फिरोजाबाद		81.	वैष्णवी बाजपेयी, आबू रोड		131.	शुकरमपाल, जामरामबास	
33.	रामफूल, जयपुर		82.	नंदलाल, टोंक		132.	मनोज कुमार चौधरी, भरतपुर	
34.	राम सिंह, चूरू		83.	मुबारक, फिरोजाबाद नुहू		133.	सुनीता देवी, धौलपुर	
35.	छोटी देवी, अजमेर		84.	माया देवी, फागी, दूदू		134.	आशीष कुमार बेनिवाल, माधोगढ़	
36.	बालमुकंद, भीलवाड़ा		85.	बुन्दु खां, दूदू (मजाबाद)		नवम्बर, 2023		
37.	रौनक, अजमेर		86.	गणपत प्रजापत, भीलवाड़ा		1.	हेतराम, खिदाश्री	
38.	गोपाल लाल शर्मा, जयपुर		87.	अंजली प्रजापत, जयपुर		2.	देवीलाल, अनूपगढ़	
39.	श्यामा देवी मंगल, भवानीमण्डी		88.	पुण्यराम, अलवर		3.	चेतनाराम, बीकानेर	
40.	शुभकरण, चूरू		89.	सीता देवी मूंदड़ा, केकड़ी		4.	ओमप्रकाश परिहार, मंगरा	
41.	जनक, हनुमानगढ़		90.	मांगीलाल सुराणा, बीकानेर		5.	कमला देवी, सीकर	
42.	गणेश सिंह, भरतपुर		91.	रामजीलाल शर्मा, दौसा		6.	संजय चौधरी, जयपुर	
43.	गौरव कुमार अस्थाना, जयपुर		92.	स्वरूप, करौली		7.	पद्मा देवी, पाली	
44.	कमल चन्द जैन, पाली		93.	रिद्धकरण चौपड़ा, जयपुर		8.	कैलाश चन्द पाण्डे, सीतापुरा	
45.	तिलक सचदेवा, कोटा		94.	कुलवंत कौर, जयपुर		9.	शारदा देवी, हनुमानगढ़	
46.	जीतू राम मीणा, गंगापुरसिटी		95.	विनोद कुमार जैन, ब्यावर		10.	श्यामवीर, भरतपुर	
47.	श्रीनाथ माहेश्वरी, कोटा		96.	प्रेमचन्द छत्तर, मनोहरथाना		11.	नानछू राम, जयपुर	
48.	भागीरथ, दांतारामगढ़		97.	गौमती देवी, धर्मल पावर कॉलोनी		12.	वर्षा माथुर, जयपुर	
49.	मोहन लाल, चौमूं		98.	शांतिलाल जैन, कोटा		13.	पारस भाई जैन, अखलेरा	
			99.	गोकुल चन्द, मथुरा (यू.पी.)		14.	ऋषभ सक्सेना, जयपुर	

नेत्रदाताओं की सूची

क्र.स.	नाम	पता	क्र.स.	नाम	पता	क्र.स.	नाम	पता
15.	अंजली, आगरा		65.	अनिल कुमार, बीकानेर		115.	पाची देवी, जयपुर	
16.	अमित कुशल, कोटा		66.	पवन, जयपुर		116.	कन्हैयालाल, गवारियावास	
17.	राजकुमारी जैन, कोटा		67.	विमल जैन, जयपुर		117.	रामपाल, राजसमंद (शाहपुरा)	
18.	पोखर लाल, जयपुर		68.	खुशी, लूणियावास, जयपुर		118.	लालचन्द मित्तल, अजमेर	
19.	धर्मेन्द्र सिंह, फतेहपुर सिवाड़		69.	शीला, धौलपुर		119.	पूनम नागर, कोटा	
20.	तमन्ना, कुचामनसिटी, नागौर		70.	सुरपाल सिंह सेठी, कोटा		120.	इन्द्र मेथा, जोधपुर	
21.	सुरेन्द्र, चूरू		71.	विजय कुमार वर्मा, जयपुर		121.	श्रीमती सुशीला जैन, जयपुर	
22.	हबीब खान, सीकर		72.	राममूर्ति, भरतपुर		122.	पारस मल जैन, भवानीमंडी	
23.	प्रियंका, झुंझुनूं		73.	हरपाल, अलवर		123.	राजरानी, छीपाबड़ौद	
24.	सूरज मल अग्रवाल, जयपुर		74.	रश्मि देवी, अजमेर		124.	राधेश्याम गुर्जर, टोंक	
25.	सुशीला देवी बाफना, विजयनगर		75.	चन्द्रशेखर निर्वाण, अजमेर		125.	विक्रम, राजगढ़, अलवर	
26.	ज्ञानदीप, टोंक		76.	चंदना, नोएडा		126.	दीनदयाल पारीक, निवाई, टोंक	
27.	जगरूप गुर्जर, अलवर		77.	कटिया, महाराष्ट्र		127.	लक्ष्मण, जयपुर	
28.	गोपीलाल मीणा, दौसा		78.	डॉ. अशोक वधानी, अजमेर		128.	राजू, धौलपुर	
29.	देसराज मेहंदीरता, जयपुर		79.	अशोक धानका, जयपुर		129.	कालूराम, जयपुर	
30.	हेमराज, अजमेर		80.	श्याम सुन्दर असवाल, जयपुर		130.	गौतम कोठारी, जोधपुर	
31.	तूफान चीता, अजमेर		81.	ओंकार सिंह साहनी, कोटा		131.	शंकर लाल मित्तल, कोटा	
32.	लाड़ कंवर चौरड़िया, अजमेर		82.	रमेश चन्द जैन, बूंदी		132.	बुद्धिप्रकाश सैनी, जयपुर	
33.	बाला देवी, नीमकाथाना		83.	रामू रींगस, सीकर		133.	सुमित यादव, सुल्तानपुर (यू.पी.)	
34.	जतन बाई जैन, रामगंजमंडी		84.	कमलेश लखेरा, जयपुर		134.	सतनाम कौर, बारां	
35.	कर्मवीर, रेवाड़ी (हरियाणा)		85.	अशोक कुमार, झुंझुनूं		135.	तारा शर्मा, विधायक कॉलानी	
36.	भवानी सिंह, बीकानेर		86.	रामप्रसाद मीणा, सवाईमाधोपुर		136.	पवन कुमार, सीकर	
37.	मोहनी जाट, बीकानेर		87.	पूजा, बीकानेर		137.	दीपचंद शर्मा, जयपुर	
38.	सुन्दर लाल रामचंदानी, जयपुर		88.	श्रीमती कांति देवी, संधारा		138.	दिनेश कुमार भार्गव, सीकर	
39.	सुरेश, दूदू		89.	जगदीश तनवार, महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)		139.	देवकरण बलाई, कोटपूतली, बहरोड	
40.	विनोद कुम्हार, भरतपुर		90.	प्रहलाद, सीकर		140.	मोहनलाल यादव, जयपुर	
41.	महेश बीदावत, अजमेर		91.	अरुण गोलछा, जोधपुर		141.	उदय चन्द सिसोदिया, ब्यावर	
42.	नितेश कुमार विजय, जयपुर		92.	विनोद नवलखा, जयपुर		142.	श्रीराम गौड़, बीकानेर	
43.	कृष्णा देवी, नई दिल्ली		93.	रेखा मीणा, जयपुर		143.	कमला देवी अडवानी, जयपुर	
44.	राजबाला, महेन्द्रगढ़		94.	मनोज कुमार, दौसा		144.	रमेश सैनी, सीकर	
45.	गिराज प्रसाद, थानागाजी, अलवर		95.	अभिमन्यु शारड़ा, कोटा		145.	राहुल कुमार देवंदा, जयपुर	
46.	वर्धमान सिंह जैर, कोटा		96.	राममूर्ति देवी, कोटा		146.	नौरत दास तेवानी, अजमेर	
47.	हरीश कुमार, जयपुर		97.	पूरो देवी, बाड़मेर		147.	महेन्द्र सिंह, उदयपुर	
48.	नरेन्द्र, जयपुर		98.	सुरेश जाजू, जोधपुर		148.	सुन्दर लाल, ब्यावर	
49.	खेमियो गेहानी, जयपुर		99.	शीला देवी, जोधपुर		149.	आशा देवी लूणिया, बीकानेर	
50.	संजय मेघवाल, बीकानेर		100.	शारदा दाधीच, कोटा		150.	नितिन शर्मा, अजमेर	
51.	अमित यादव, अलवर		101.	रजनी लूणकर पाली				
52.	कृणाल कटारिया, अजमेर		102.	नारायण दास वाधवानी, भीलवाड़ा				
53.	सुरेन्द्र सिंह, केकड़ी		103.	मुनाराम, बीकानेर				
54.	रजनीश, करौली		104.	अमन बैरवा, अजमेर				
55.	चौथमल, नीमकाथाना		105.	प्रकाश चन्द जैन, जयपुर				
56.	संतोष देवी, अजमेर		106.	किशोर बैरवा, टोंक				
57.	शिखा अशदिया, कोटा		107.	सुभाष चन्द जैन, कोटा				
58.	सुनील नौगजा, जयपुर		108.	रामवीर, भरतपुर				
59.	दीन्नु उपेनिया, जयपुर		109.	संदीप, नागौर				
60.	ओमप्रकाश, चूरू		110.	अंशी देवी, जोधपुर				
61.	मोहित कुमार बैरवा, करौली		111.	नित्य प्रकाश वैष्णव, पाली				
62.	संजय, गंगानगर		112.	आशा देवी, कोटा				
63.	राज कुमार, अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश)		113.	मथारा, बूंदी				
64.	सुनीता भाटिया, झालावाड़		114.	कुसुमलता, झालावाड़				

दिसम्बर, 2023

- जगदीश गुप्ता, जयपुर
- महावीर चन्द जांगिड़, जयपुर
- संजय वाल्मीकि, दौसा
- तूफान सूरवत, नीमच
- शैतान बैरवा, दूदू
- जानवी शर्मा, राजसमंद
- तृप्ति देवी, बारां
- कैलाश जैन, कुचामन
- कमलेश देवी, भरतपुर
- प्रशान्त जांगिड़, महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)
- आशिष, अजमेर
- मूलचन्द मांगयानी, कोटा
- सुवा देवी जैन, जोधपुर
- सत्यवीर जांगिड़, सिवाना (झुंझुनूं)

पाठकों से निवेदन

“ राजस्थान नेत्र ज्योति के पाठकगण से विनम्र अनुरोध है कि पत्रिका को और अधिक रोचक बनाने हेतु नेत्रदान से सम्बन्धित समाचार, कविता, लेख एवं चित्र इत्यादि भेजकर अपना योगदान करें। ”

नेत्रदान करना हुआ अब आसान

नेत्रदान संकल्प के लिए आई बैंक सोसायटी ऑफ राजस्थान की

वेबसाइट : www.ebsr.in

को लॉग इन कर Apply Now पर क्लिक कर नेत्रदान संकल्प पत्र भर कर नेत्रदान कर सकते हैं।

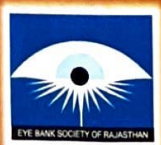
सही समय पर सही फैसला किसी की जिन्दगी रोशन कर सकता है।
नेत्रदान के लिए हमें बस एक कॉल कीजिये।

ONE CALL DOES IT ALL



HELPLINE
18002020388

आइये, नेत्रदान को परिवार की परम्परा बनायें।



आई बैंक सोसायटी ऑफ राजस्थान

मोबाइल सर्जिकल यूनिट कैम्पस, मोती डूंगरी रोड, जयपुर - 302 004

फोन : 0141-260 4117, 8559900955, 98292 14013 E-mail : ebsr_jp@hotmail.com • website : www.ebsr.in

JAIPUR • UDAIPUR • JODHPUR • AJMER • KOTA • BHILWARA • PALI • ALWAR • BUNDI • BIKANER • SHRI GANGANAGAR

स्वत्वाधिकारी आई बैंक सोसायटी ऑफ राजस्थान के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक, अशोक भण्डारी द्वारा पॉपुलर प्रिन्टर्स, जयपुर एवं आई बैंक सोसायटी ऑफ राजस्थान, मोबाइल सर्जिकल यूनिट कैम्पस, मोती डूंगरी रोड, जयपुर - 302004 द्वारा प्रकाशित

सम्पादक: लक्ष्मण बोलिया

Website : www.ebsr.in Face book page : [fb/eyebanksocietyofraj](https://www.facebook.com/eyebanksocietyofraj) Youtube : Eye Bank Society of Rajasthan (EBSR)